फणीश्वरनाथ रेणु

जन्म	:	4 मार्च 1921 ।
निधन	:	11 अप्रैल 1977 ।
जन्म-स्थान	:	औराही हिंगना, जिला - पूर्णिया (वर्तमान अररिया), बिहार ।
पिता	:	शिलानाथ मंडल ।
शिक्षा	:	प्रारंभिक - गढ़बनैली, सिमरबनी, अररिया और फारबिसगंज में । माध्यमिक - विराटनगर (नेपाल) के विराटनगर आदर्श उच्च विद्यालय में ।
भाषा ज्ञान	:	मैथिली, हिंदी, अंग्रेजी के अतिरिक्त बंगला, नेपाली आदि ।
विशेष संपर्क	:	विराटनगर के स्कूली जीवन में ही वी० पी० कोइराला से संपर्क जो प्रगाढ़ हो गया तथा राजनीतिक गतिविधियों का बीज सिद्ध हुआ ।
राजनीतिक गतिविधियाँ	:	1942 के स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भागीदारी । 1950 में नेपाल में दमनकारी, अत्याचारी राजाशाही के विरुद्ध क्रांति एवं राजनीति में जीवंत भूमिका । 1972 के बाद पुनः राजनीति में सक्रिय, निर्दलीय उम्मीदवार बनकर चुनाव लड़े और हारे । 1974 में जे० पी० के आग्रह पर पुनः बिहार आंदोलन में सक्रिय । सत्ता के दमनचक्र के विरोध में 'पद्मश्री' उपाधि का त्याग ।
वृत्ति	:	1948-50 के बीच फारबिसगंज के सार्वजनिक पुस्तकालय में पुस्तकपाल की नौकरी । इस दौरान वहाँ की सभी पुस्तकें पढ़ गए थे । ऑल इंडिया रेडियो में कुछ दिनों की नौकरी । गाँव पर कृषि कार्य की देखभाल और स्वतंत्र लेखन ।
प्रमुख कृतियाँ	:	मैला आँचल, परती परिकथा, कितने चौराहे, दीर्घतपा, जुलूस, पल्टूबाबू रोड (उपन्यास), ठुमरी, हाथ का जस, मेरी प्रिय कहानियाँ, अगिनखोर, आदिम रात्रि की महक, एक श्रावणी दोपहरी की धूप, अच्छे आदमी (कहानी संग्रह) ऋणजल-धनजल, वनतुलसी की गंध, श्रुत-अश्रुत पूर्व, नेपाली क्रांतिकथा (संस्मरण और रिपोर्ताज) । 'रेणु रचनावली' पाँच खंडों में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित । 'मैला आँचल' और 'तीसरी कसम' पर फिल्में बनीं जो काफी लोकप्रिय हुईं ।

फणीश्वनाथ रेणु हिंदी के अप्रतिम कथाशिल्पी और लेखक थे । हिंदी के आंचलिक कथाकार के रूप में उनकी ख्याति राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय है । उपन्यास और कहानी, दोनों कथारूपों की अपनी मनोरम कलाकृतियों से उन्होंने पूर्णिया के अपने ग्रामीण अंचल तथा वहाँ के जीते-जागते चरित्रों को पाठकों के मानस में अमिट कर दिया है । रेणु में बाह्य परिवेश और सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ के प्रभावशाली अंकन की दुर्लभ प्रतिभा तो थी ही, पर उससे कहीं अधिक उनमें अपने पात्रों-चरित्रों के अंतर्मन में पैठने तथा उनका

तद्वत चित्रण कर देने की सम्मोहक कला थी । उनकी अगाध संवेदना, सहानुभूति की बंकिम भंगिमा, दृश्यों और चरित्रों में अव्यक्त लय और संगीत को शब्दों में बाँध लेने की सिफत उन्हें एक महान कलाकार बनाती है । रेणु की कला सहृदय और रसिक पाठकों को तटस्थ नहीं रहने देती, बरबस उन्हें अपने सम्मोहन में बाँध लेती है, अपने साथ बहा ले चलती है । रेणु अपने समय के उन कुछ दुर्लभ कथाकारों में हैं जिनके कथा गद्य में संगीत के अंतर्व्याप्त गुण हैं ।

कथा साहित्य के अतिरिक्त संस्मरण और रिपोर्ताज विधाओं में भी रेणु अनुपम दिखलाई पड़ते हैं । उन्होंने काफी संख्या में संस्मरण और रिपोर्ताज लिखे हैं और अपनी पीढ़ी में इन विधाओं और रचनारूपों को ठहराव से उबारकर उल्लेखनीय गति और मोड़ दिया है । उनके रिपोर्ताज दृश्य, घटना, परिवेश और पात्रों को यथानुरूप बल देते हुए जीवंत कर देते हैं तथा पाठक की अंतरंगता हासिल कर लेते हैं ।

यहाँ प्रस्तुत पाठ उनकी पुस्तक 'श्रुत-अश्रुत पूर्व' से संकलित है । इस रचना में संस्मरण और रिपोर्ताज के मिले-जुले गुण हैं । 'कोसी' को 'बिहार का शोक' कहा जाता रहा है । यह उद्दाम वेगों वाली खानाबदोश नदी लगातार अपना प्रवाह पथ बदलती रहती है । जिधर से एकबार गुजरी कि वहाँ की धरती बालूचरों में बदलकर अनुर्वर हो गई । 'कोसी परियोजना' के द्वारा कैसे कोसी के शोक-विषाद को उल्लास में बदल दिया गया और मनुष्य के प्रयत्न और पुरुषार्थ के द्वारा यह चकित कर देनेवाला परिवर्तन हो सका, यही इस रचना का विषय है ।

◆ ◆ ◆

"बिहार के एक छोटे भूखंड की हथेली पर रेणु ने समूचे उत्तरी भारत के किसान की नियति रेखा को उजागर किया था । वह रेखा किसान की किस्मत और इतिहास के हस्तक्षेप के बीच गुँथी हुई थी जहाँ गाँधीजी का सत्याग्रह आंदोलन, सोशलिस्ट पार्टी के आदर्श, किसान सभाओं की मीटिंगें अलग-अलग धागों से रेणु का संसार बुनती हैं ।

रेणु ने जिस तीली से किसान के उदास, धूल-धूसरित क्षितिज में छिपी नाटकीयता को आलोकित किया था उसी तीली से हिंदी के परंपरागत यथार्थवादी उपन्यास के ढाँचे को भी एकाएक ढहा दिया था । यह रेणु की अविस्मरणीय देन और उपलब्धि है।"

(रेणु : संस्मरण और श्रद्धांजलि)

–निर्मल वर्मा

उतरी स्वप्न परी : हरी क्रांति

कोसी या उसके किसी अंचल के संबंध में जब भी कुछ कहने या लिखने बैठता हूँ, बात बहुत हद तक 'व्यक्तिगत' हो जाती है । ऐसा होना स्वाभाविक भी है । क्योंकि, कोसी हमारे लिए नदी ही नहीं, माई भी है। पुण्यसलिला, छिन्नमस्ता, भीमा, भयानका भी : प्रभावती-कोसी मैया !!

हम कोसी के उस अंचल के वासी हैं, जिससे होकर करीब तीन-चार सौ वर्ष पहले कोसी बहा करती थी । और यह तो सर्वविदित है कि कोसी जिधर से गुजरती, धरती बाँझ हो जाती । सोना उपजानेवाली काली मिट्टी सफेद बालूचरों में बदल जाती । लाखों एकड़ बंध्या धरती उत्तर नेपाल की तराई से शुरू होकर दक्षिण गंगा के किनारे तक फैली परती के नक्शे को दो असम भागों में बाँटती हुई ।

इस 'परती' के उदास और मनहूस बादामी रंग को बचपन से ही देखता आया हूँ–दूर तक फैली साकार उदासी । जिस पर बरसात के मौसम में क्षणिक आशा की तरह कुछ दिनों के लिए हरियाली छा जाती–वरना बारहों महीने, दिन-रात, सुबह-शाम, धूसर और वीरान....।

और इस मरी हुई मिट्टी पर बसे हुए इंसान ?

मलेरिया और कालाजार से जर्जर शरीर, रक्त-मांसहीन चलते-फिरते नरकंकालों के समूह, जिनकी जिंदगी में न कहीं रस और न कोई रंग; रोने और कराहने के सिवा कुछ नहीं जानते थे–न हँसना, न मुस्कराना । जिनके चेहरों पर हमेशा आतंक की रेखाएँ छाई रहतीं और आँखों में दुनिया-भर की उदासी। ऐसी आँखों में रंगीन और सुनहले सपने कैसे पल सकते हैं ?

.....बचपन के उन दिनों की याद आती है । हर साल हमारे एक दर्जन साथी, हमजोली हमसे बिछुड़ जाते.....हमारे साथ पढ़नेवाले, साथ खेलनेवाले । और हर ऐसे मौके पर हमें यह एहसास होता–शायद, अगले साल हम भी नहीं रहेंगे । अगले साल क्या, अगले महीने या दूसरे ही दिन, अथवा घड़ी भर में घड़ा फूट जा सकता है । हमने मैलेग्नेण्ड - मलेरिया में मरते हुए लोगों को देखा था–डेढ़ घंटे में ही मृत्यु ।

किंतु विधाता की सृष्टि में मानव ही सर्वश्रेष्ठ प्राणी है । वह निराशा के घोर अंधकार में भी नन्हीं आशा का टिमटिमाता हुआ दीप लेकर आगे बढ़ता रहा है- अंधकार से लड़ता रहा है।

मैंने शुरू में ही कह दिया है कि कोसी के किसी अंचल पर कुछ कहते समय मेरी बात बहुत हद तक व्यक्तिगत हो जाया करती है । आज ही नहीं–बीस-पच्चीस साल पहले से ही.!!

याद है, बीस-बाईस साल पहले 'डायन कोसी' शीर्षक से मेरा एक रिपोर्ताज 'जनता' में प्रकाशित हुआ था । जिसका अंत आशा भरे इन शब्दों में हुआ था–''परती के दिन फिरेंगे ! ..प्राणों में घुले हुए रंग धरती पर फैल जाएँगे !''

इस रिपोर्ताज ने मेरे दोस्तों को एक मसाला दिया । वे अक्सर मुझे चिढ़ाने के लिए कहा करते, ''क्यों, आपके प्राणों में घुले हुए रंग धरती पर फैल गए क्या ? .....जनाब ! आपके सुनहले सपनों के अंडे कब फूटेंगे – सोने की चिड़ियाँ कब चहचहाएँगी ?''

मैं पहले थोड़ा अप्रतिभ हो जाता । फिर हँसकर दृढ़तापूर्वक जवाब देता, ''आजादी की पहली सुबह.....।''

आजादी के बाद इसी अंचल की पृष्ठभूमि में मेरा पहला उपन्यास प्रकाशित हुआ, जिसका एक प्रमुख पात्र जो मलेरिया और कालाजार उन्मूलन में लगा हुआ है, इसी इलाके से अपने एक प्रियजन को पत्र लिखता है–'यहाँ की मिट्टी में बिखरे, लाखों-लाख इंसानों की जिंदगी के सुनहरे सपनों और अधूरे अरमानों को बटोरकर यहाँ के प्राणियों के जीव-कोष में भर देने की कल्पना मैंने की थी । मैंने कल्पना की थी, हजारों स्वस्थ इंसान, हिमालय की कंदराओं में, अरुण-तिमुर-सुणकोसी के संगम पर–एक विशाल 'डैम' बनाने के लिए पर्वत-तोड़ परिश्रम कर रहे हैं ।.....लाखों एकड़ बंध्या धरती, कोसी-कवलित, भरी हुई मिट्टी शस्य श्यामला हो उठेगी । कफन-जैसे सफेद, बालू-भरे मैदानों में धानी रंग की जिंदगी की बेलें लग जाएँगी । मकई के खेतों में घास गढ़ती हुई औरतें बेवजह हँस पड़ेंगी । मोती जैसे सफेद दाँतों की दुधिया चमक.....! !'

और, तब मेरे दोस्तों को मजाक के लिए–'धानी रंग, जिंदगी की बेल, मकई के खेत और दुधिया चमक' जैसे कई शब्द मिल गए । समय-असमय मेरे इन शब्दों के व्यंग्यबाण से मुझे ही मर्माहत करने का अवसर वे नहीं खोते । और, मैं हमेशा पूर्ववत हँसकर कभी आशा-भरी कोई बहुत बड़ी बात अथवा किसी श्लोक या किसी पद्य की ऐसी ही पंक्ति कह देता–'नर हो न निराश करो मन को ।'

इसलिए, जब सचमुच एक दिन कोसी योजना का आयोजन होने लगा–मैं अपने को जब्त नहीं रख सका । दूने उत्साह से अपना दूसरा उपन्यास 'परती : परिकथा' में हाथ लगा दिया । उपन्यास लिखने के दौरान पहाड़ों की कंदराओं में तपस्या में लीन 'देवगणों' को बार-बार जाकर देख आता । मेरा नया तीर्थ बराहक्षेत्र, जहाँ आदमी लड़ रहे थे । बड़े-बड़े टनेल में पहाड़ काटनेवाले पहाड़ी जवानों से बातें करके धन्य हो जाता । अरुण-तिमुर और सुणकोसी के संगम पर बैठकर पानी मापने वाले, सिल्ट की परीक्षा करनेवाले विशेषज्ञ को श्रद्धा तथा भक्ति से प्रणाम करके लौट आता । हर बार नई आशा की रंगीन किरण लेकर लौटता ।

मेरा उपन्यास समाप्त हुआ, फिर प्रकाशित हुआ । किंतु, उस समय कोसी प्रोजेक्ट 'परीक्षा-निरीक्षा' के स्तर पर ही चल रहा था । अत: मेरे कृपालु मित्रों को इस बार मजाक का ही नहीं, बहस का भी विषय मिला ।

''धूसर, वीरान अंतहीन प्रांतर ! पतिता भूमि, परती जमीन, बंध्या धरती ! धरती नहीं, धरती की लाश ! जिस पर कफन की तरह फैली हुई है–बालूचरों की पंक्तियाँ.....!''
'परती : परिकथा' का प्रारंभ इन्हीं शब्दों से हुआ है ।

और, अंत हुआ है इन पंक्तियों से–''पर्दे पर धीरे-धीरे बादामी छाया छा जाती है । वीरान धरती का रंग बदल रहा है धीरे-धीरे–हरा, लाल, पीला, बैंगनी । हरे-भरे खेत । परती पर रंग की लहरें..... बाँसुरी रंगों को सुर प्रदान कर रही है । अमृत हास्य परती पर अंकित हो रहा ।. .... आसन्नप्रसवा परती हँसकर करवट लेती है !''

बाद में, मुझे भी लगा कि मैंने अतिरिक्त उत्साह में संभवतः बहुत बढ़-चढ़कर बातें कह दी हैं । मित्रों की बातें मेरे कानों के पास रह-रहकर गूँज जातीं–''भाई साहब ! कागज पर रंग की लहरें लहराना और अमृत हास्य अंकित करना बहुत आसान है, परती पर नहीं ।.....अभी कोसी प्रोजेक्ट का 'क' भी नहीं शुरू हुआ और आप हरे-भरे खेत देखने लग गए ? .....सावन के अंधे को इरियाली-ही-हरियाली सूझती है । ऐसा भी तो हो सकता है कि डैम बनाने के बावजूद–इस परती धरती को सींचकर भी खेती संभव नहीं हो ? तब, आपकी करवट लेती इस आसन्नप्रसवा धरती के स्वप्न का क्या होगा ? आपके वे सपने मिट्टी में बिखरे-ही-बिखरे रह जाएँगे ।''

किंतु, इन सारी निराश वाणियों के बावजूद–अंततः मेरे मन के कोने में प्रतिष्ठित दृढ़ विश्वास का स्वर कवि चंडीदास के सुर में मुखरित होता–'सुन रे मानिस भाय । सबारि ऊपर मानुस सत्य तार ऊपर किछु नाय ।' (सुनो हे मनुष्य भाइयो ! सबके ऊपर मनुष्य ही सत्य है, उसके ऊपर कुछ भी नहीं ।)

तीन साल पहले की बात है । गाँव पहुँचकर एक नई और दिलचस्प कहानी सुनने को मिली । हमारे गाँव का एक कर्मठ आदमी दस-बारह साल पहले गाँव छोड़कर पूरब मुलुक–बंगाल की ओर कमाने गया । पहले तो वह छठे-छमाहे, होली-दिवाली में गाँव आता भी था, लेकिन, पिछले आठ साल से वह गाँव नहीं आया था । उधर ही बस गया था । गाँव में एक-डेढ़ बीघा जमीन थी, उसी को बेचने के लिए वह आठ साल के बाद आया । स्टेशन पर उतरकर उसने अपने गाँव की पगडंडी पकड़ी । कुछ दूर जाने के बाद उसने अपने गाँव की ओर निगाह दौड़ाई । विशाल परती के उस छोर पर उसका गाँव...लेकिन, यह क्या.....यहाँ परती कहाँ है ? उसे लगा, वह रास्ता भूलकर दूसरी ओर आ गया है, जहाँ तक नजर जाती है, धान के खेत लहरा रहे हैं–चारों ओर हरियाली है । नहर, आहर, पैन-पुलिया और बाँध–यह कहाँ आ गया वह ? उसको विश्वास हो गया कि वह नींद में ऊँघता हुआ किसी दूसरे स्टेशन पर उतर गया है । वह स्टेशन लौट आया और चिंतित होकर पछने लगा कि क्या यह वही स्टेशन है ? तो उसका गाँव कहाँ चला गया, किधर चला गया ?

इसीलिए, गाँव के लड़कों ने इस आदमी का नया नाम दिया है–'सुदामा ।' उसको देखते

ही लोग गुनगुनाने लगते हैं–'सुदामा मंदिर देखि डर्‌यो ।'

सो, गाँव को हमेशा छोड़कर पूरब मुलुक-बंगाल में बस जानेवाले सुदामाजी ने तब जमीन बेचने का इरादा बदल दिया । बंगाल में बसे परिवार को उठाकर फिर गाँव ले आए । पिछली बार डेढ़ बीघा जमीन में तीस मन 'लर्मा-रोजो' मैक्सिकन गेहूँ पैदा. करने के बाद संकर मकई और मकई के बाद आई-आर-एइट धान....।

इस अभिनव सुदामाचरित के बाद इस अंचल की प्रगति और परिवर्तन के बारे में और क्या कहा जाए ? .....जिस धरती पर कभी दूब भी हरी नहीं होती थी – वहाँ धान और गेहूँ की बालियाँ झूमती हैं....नहरों के जाल बिछ गए हैं.....परती का चप्पा-चप्पा हँस रहा है । सिंचाई, रासायनिक खाद और उन्नत बीज की महिमा से बंध्या धरती अन्नपूर्णा ही नहीं, परिपूर्णा हो गई है !

जिस दिन हमारे खलिहान पर गेहूँ की पहली फसल कटकर आई, मेरा रोम-रोम पुलकित हो गया । मैंने बालियों को सिर से छुलाकर मूल मंत्र का जाप किया । फिर, अपने दोनों उपन्यासों की निजी प्रतियाँ निकाल लाया और उनके अंतिम पृष्ठों पर लिख दिया–

'लाखों एकड़ कोसी-कवलित मरी हुई मिट्‌टी शस्य श्यामला हो उठी है । कफन-जैसे सफेद बालू-भरे मैदान में धानी रंग की जिंदगी की बेलें लग गई हैं । मकई के खेतों में घास गढ़ती औरतें सचमुच बेवजह हँस पड़ती हैं ।....सारी धरती मानो इंद्रधनुषी हो गई है ।'

'दिन फिरे हैं किसानों के । खेतों में ट्रैक्टर चल रहे हैं । सब मिलाकर एक स्वप्नलोक की सृष्टि साकार हो गई है । चारों ओर अमृत हास्य । एक हरी क्रांति अपनी पहली मंजिल पर पहुँचकर सफल हुई है । सपने सच भी होते हैं और 'अपने' भी ।

https://www.evidyarthi.in/

जिन्हें विश्वास न हो, वे स्वयं आकर देख जाएँ – प्राणों में घुले हुए रंग धरती पर किस तरह फैल रहे हैं, फैलते जा रहे हैं ।'

❑❑❑

अभ्यास

पाठ के साथ

1. लेखक ने कोसी अंचल का परिचय किस तरह दिया है ?
2. जब लेखक कोसी या उसके किसी अंचल के संबंध में कुछ कहने या लिखने बैठता है, तो बात बहुत हद तक व्यक्तिगत हो जाती है । ऐसा क्यों ?

3. पाठ में लेखक ने कोसी को 'माई' भी कहा है और 'डायन कोसी' शीर्षक से रिपोर्ताज लिखने की चर्चा भी की है । लेखक का कोसी से कैसा रिश्ता है ?
4. 'मानव ही सर्वश्रेष्ठ प्राणी है ।' पाठ के संदर्भ में स्पष्ट करें ।
5. सुदामाजी की किस कथा का उल्लेख लेखक ने पाठ में किया है ?
6. लेखक अपने दूसरे उपन्यास में दूने उत्साह से क्यों लग गया ? पहले उपन्यास से इसका क्या संबंध है ?
7. 'जिन्हें विश्वास न हो, वे स्वयं आकर देख जाएँ – प्राणों में घुले हुए रंग धरती पर किस तरह फैल रहे हैं – फैलते ही जा रहे हैं ।' – इस उद्धरण की सप्रसंग व्याख्या करें ।
8. रेणु के इस रिपोर्ताज की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं ? अपने शब्दों में लिखें ।

पाठ के आस-पास

1. रिपोर्ताज गद्य लेखन की आधुनिक विधा है । इस विषय में अपने शिक्षक से विशेष जानकारी प्राप्त करें ।
2. कोसी के उद्‌गम एवं प्रवाह क्षेत्र को मानचित्र पर दिखाएँ ।
3. फणीश्वरनाथ रेणु का उपन्यास 'मैला आँचल' एक कालजयी उपन्यास है । इसे पुस्तकालय से लेकर पढ़ें एवं इस पर अपने मित्रों एवं शिक्षक से चर्चा करें ।
4. रेणु के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक संक्षिप्त लेख लिखिए ।
5. रेणु का नेपाल से गहरा रिश्ता था । नेपाल पर केंद्रित उनकी पुस्तक 'नेपाली क्रांति कथा' पढ़ें और अपने शिक्षक से उस पर चर्चा करें ।
6. कोसी क्षेत्र में जन्म लेने वाले पाँच लेखकों की सूची बनाएँ एवं उनकी कृतियों के नाम लिखें ।
7. आप अपने विद्यालय या विद्यालय में हुए किसी समारोह या पड़ोस के बाजार या किसानों की स्थिति पर एक रिपोर्ताज लिखें ।
8. रेणु का पहला उपन्यास कौन-सा है जिसका एक प्रमुख पात्र मलेरिया और कालाजार उन्मूलन में लगा हुआ है ?
9. रेणु का दूसरा उपन्यास कौन-सा है और वह किस क्षेत्र की कथा प्रस्तुत करता है ?
10. रेणु को आंचलिक कथाकार कहा जाता है इसका क्या अर्थ है ? अपने शिक्षक से मालूम करें ।
11. रेणु एक श्रेष्ठ कहानीकार के रूप में जाने जाते हैं । उनकी सात कहानियों का संग्रह करें एवं उनकी सातों कहानियों पर बारी-बारी से अपने मित्रों एव शिक्षक से चर्चा करें ।
12. रेणु की एक महान कहानी है – 'तीसरी कसम' । इस कहानी पर 'तीसरी कसम' नाम से ही फिल्म भी बनाई जा चुकी है । इस फिल्म का कैसेट उपलब्ध करें एवं देखें तथा अपने मित्रों और शिक्षक से यह चर्चा करें कि इस कहानी का फिल्मी रूपांतर कैसा हुआ है ?
13. यहाँ कवि त्रिलोचन की एक कविता दी जा रही है – 'नदी : कामधेनु'; कविता पढ़कर विचार करें कि कविता में व्यक्त भावों का प्रस्तुत पाठ से क्या आशय साम्य है ।

नदी ने कहा था : मुझे बाँधो
मनुष्य ने सुना और

तैर कर नदी को पार किया ।

नदी ने कहा था : मुझे बाँधो
मनुष्य ने सुना और
सपरिवार धारा को
नाव से पार किया ।

नदी ने कहा था : मुझे बाँधो
मनुष्य ने सुना और
आखिर उसे बाँध लिया
बाँधकर नदी को
मनुष्य दुह रहा है ।
अब वह कामधेनु है ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय निर्दिष्ट करें –
   स्वाभाविक, क्षणिक, प्रकाशित, पुलकित, कवलित
2. निम्नलिखित शब्दों के समास निर्धारित करें –
   होली-दिवाली, आसन्नप्रसवा, धीरे-धीरे, हरे-भरे, रोम-रोम, बालू-भरे
3. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखें –
   हमजोली, धरती, इंसान, विधाता, पहाड़
4. 'महिमा' शब्द 'महा' से बना हुआ है । इसी तरह के शब्द निम्नांकित रूपों से बनाएँ -
   लघु, अरुण, गुरु, हरित, लाल, मधुर, श्वेत
5. निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद करें –
   उन्मूलन, हिमालय, मर्माहत, आयोजन, उन्नत
6. पाठ से तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज शब्दों के कम-से-कम पाँच-पाँच उदाहरण चुनें ।
7. निम्नलिखित वाक्यों से संज्ञा पदबंध, विशेषण पदबंध, सर्वनाम पदबंध, क्रिया पदबंध और क्रिया विशेषण छाँटें –
   (क) इस 'परती' के उदास और मनहूस बादामी रंग को बचपन से ही देखता आया हूँ ।
   (ख) मकई के खेतों में घास गढ़ती औरतें सचमुच बेवजह हँस पड़ती हैं ।
   (ग) सारी धरती मानो इंद्रधनुषी हो गई है ।
   (घ) उसको विश्वास हो गया है कि वह नींद में ऊँघता हुआ किसी दूसरे स्टेशन पर उतर आया है ।
   (ङ) कफन जैसे सफेद बालू-भरे मैदान में धानी रंग की जिंदगी के बेल लग गए हैं ।

शब्द निधि :

पुण्य सलिला	:	जिसका जल पवित्र हो
छिन्नमस्ता	:	तांत्रिकों की एक देवी, जिसका सिर कटा हुआ हो
भीमा	:	भयानक (स्त्री०)
भयानका	:	भयानक (स्त्री०)
प्रभावती	:	प्रकाशमयी, सूर्य की पत्नी
विधाता	:	ब्रह्मा, निर्माण या रचना करनेवाला
अंचल	:	क्षेत्र
अप्रतिम	:	अद्वितीय
बालूचर	:	रेतीली भूमि का विस्तार, बालू ही बालू
उन्मूलन	:	जड़ों से समाप्त करना
बंध्या	:	बाँझ, बंजर
बेल	:	लता
सिल्ट	:	बाढ़ में जमने वाली गाद-मिट्टी
मर्माहत	:	दुखी, व्यथित
कंदराओं	:	गुफाओं
धूसर	:	धूल के रंग का, खाकी
हमजोली	:	साथी, सहचर
काल-कवलित	:	समय द्वारा निगला हुआ, (कवल > कौर, निवाला)
शस्य श्यामला	:	फसलों से हरी-भरी
आसन्नप्रसवा	:	वह जिसके प्रसव का समय नजदीक हो (आसन्न-निकट)
अन्पूर्णा	:	अन्न की आपूर्ति करने वाली, देवी
पुलकित	:	हर्षित, रोमांचित